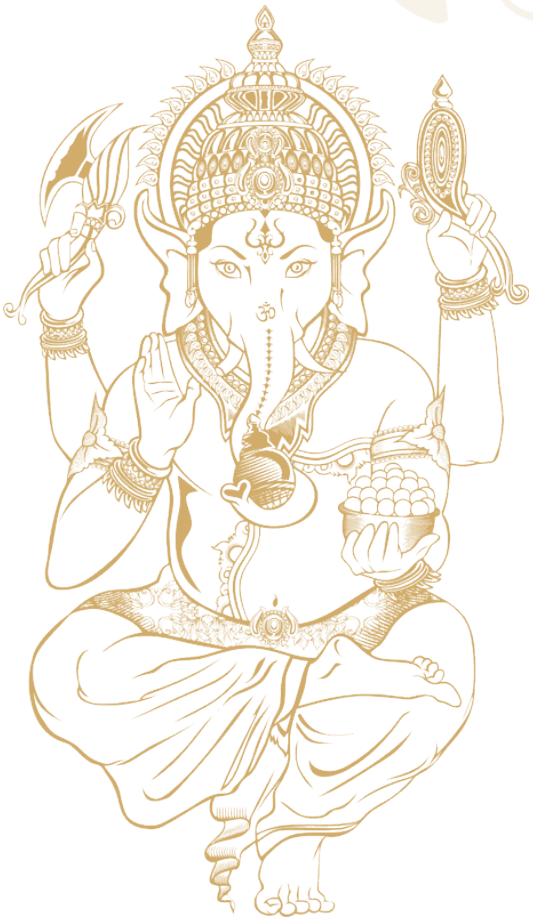

Mr.gajanan nagrikar

07 Aug 2025

12:35 AM

Yavatmal

Model: Web-MyKundli **Order No: 119214101**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**6-07/08/2025**
दिवस	बुध–गुरुवार
जन्म समय	**00:35:00 कला**
इष्ट	46:42:10 घटी
स्थान	**Yavatmal**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:24:00 उत्तर
रेखांश	78:08:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:17:28 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	00:17:32 कला
वेलान्तर	-00:05:55 कला
साम्पातिक वेल	21:19:48 कला
सूर्योदय	05:54:07 कला
सूर्यास्त	18:52:06 कला
दिनमान	12:57:59 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	20:21:15 कर्क
लग्नाचे अंश	05:45:37 वृषभ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृषभ – शुक्र
राशि–स्वामी	**धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**पूर्वाषाढ़ा – 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	विष्कुम्भ
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	धा–धर्मेन्द्र
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	श्रावण	16
पंजाबी	संवत : 2082	श्रावण	23
बंगाली	सन् : 1432	श्रावण	22
तमिल	संवत : 2082	अदी	23
केरल	कोल्लम : 1200	काभकतका	22
नेपाली	संवत : 2082	श्रावण	23
चैत्रादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 13
कार्तिकादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 12
तिथि समाप्ति वेल _____: 14:08:35
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मूल
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 12:59:46 कला
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय समयी योग _____: वैधृति
योग समाप्ति वेल _____: 07:17:18 कला
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 14:08:35 कला
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 28:58:07
भभोग _____: 62:33:30
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 10 वर्ष 9 मा 17 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

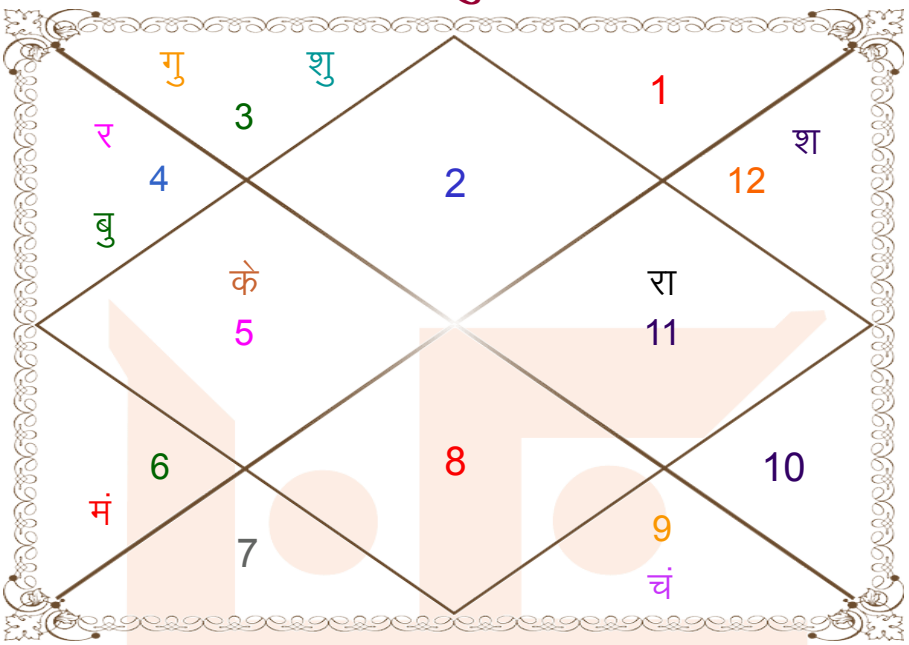

चन्द्र कुंडली

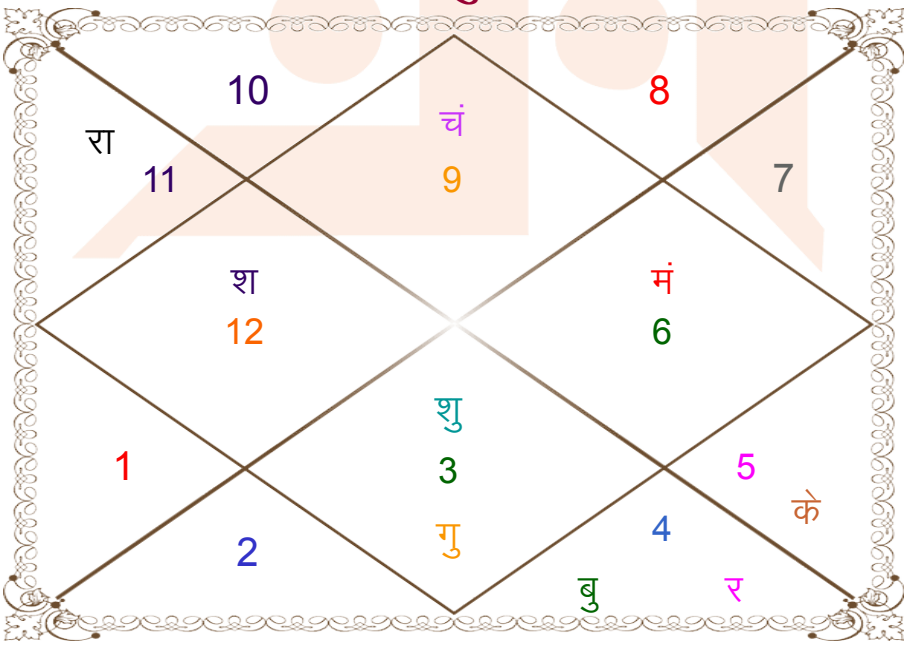

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

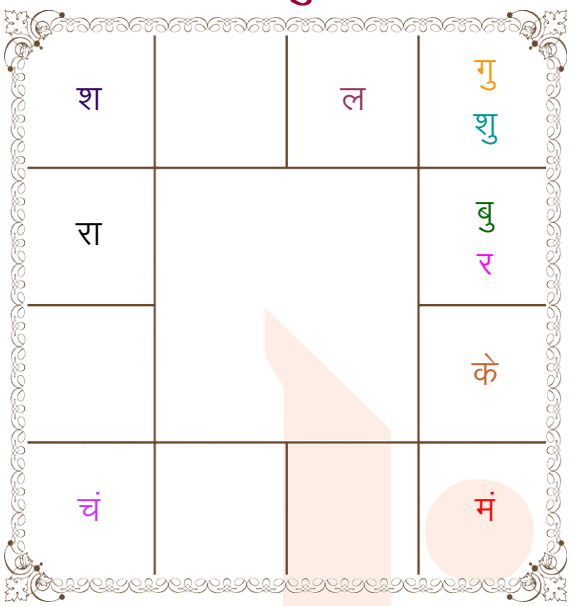

लग्न कुंडली

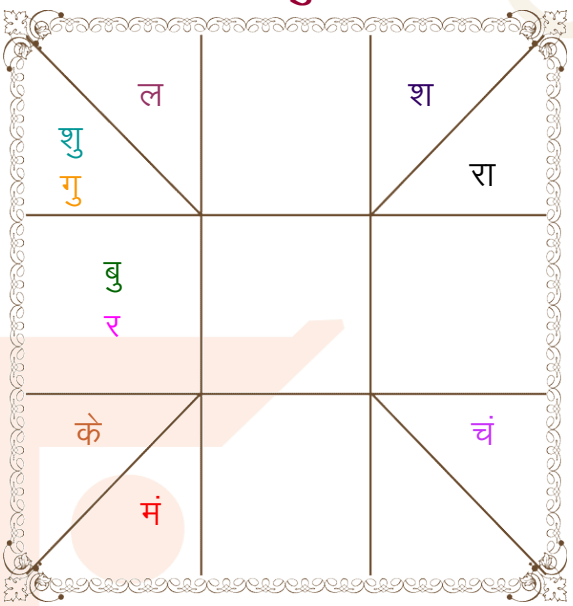

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 9मा 17दि

शुक्र	
07/08/2025	
25/05/2136	
शुक्र	24/05/2036
रवि	25/05/2042
चन्द्र	24/05/2052
मंगळ	25/05/2059
राहु	25/05/2077
गुरु	25/05/2093
शनि	25/05/2112
बुध	26/05/2129
केतु	25/05/2136

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 9मा 10दि

सिद्धा	
07/08/2025	
18/05/2029	
	00/00/0000
	00/00/0000
	07/08/2025
पिंगला	17/11/2025
धान्या	18/06/2026
भ्रामरी	29/03/2027
भद्रिका	18/03/2028
उल्का	18/05/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	05:45:37	379:19:53	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	----
सूर्य			कर्क	20:21:15	00:57:28	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			धनु	19:28:05	12:46:34	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगळ			कन्या	05:40:22	00:37:20	उ.फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध	व	अ	कर्क	11:06:51	00:27:20	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
गुरु			मिथु	18:43:25	00:12:33	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	13:29:06	01:10:00	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	मित्र राशि
शनि	व		मीन	07:13:04	00:02:23	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:32:55	00:05:36	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:32:55	00:05:36	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	06:51:45	00:01:30	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	बुध	----
नेप	व		मीन	07:40:44	00:00:59	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	----
प्लूटो	व		मक	08:04:54	00:01:22	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	----
दशम भाव			मक	23:17:31	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	सूर्य	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:12:57

लग्न–चलित

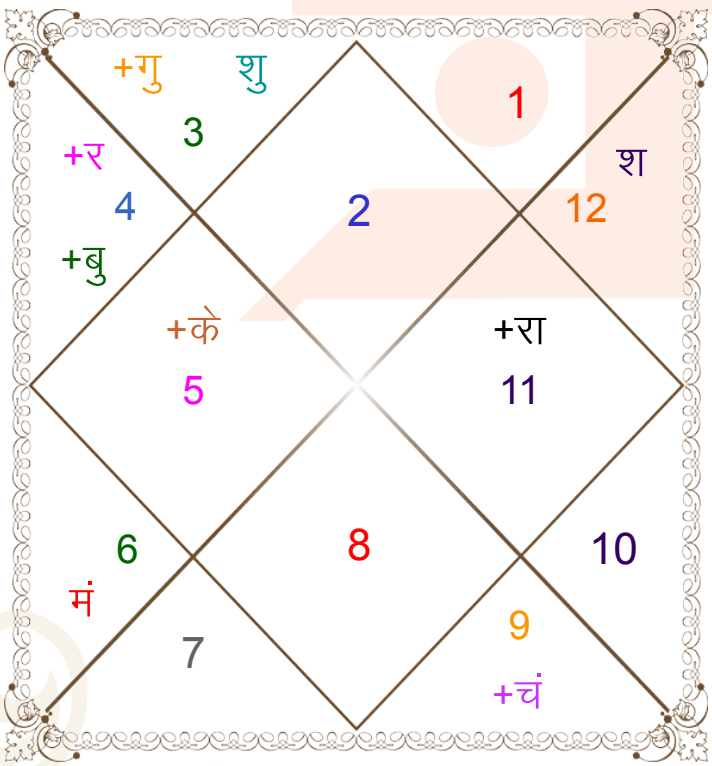

चन्द्र कुंडली

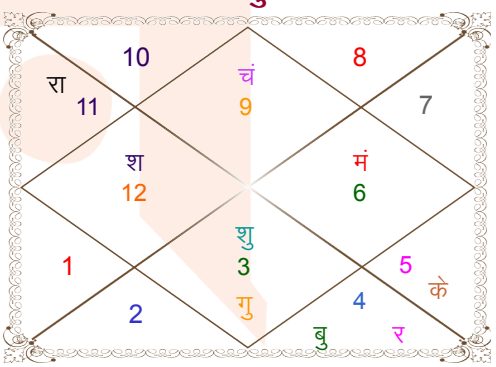

नवमांश कुंडली

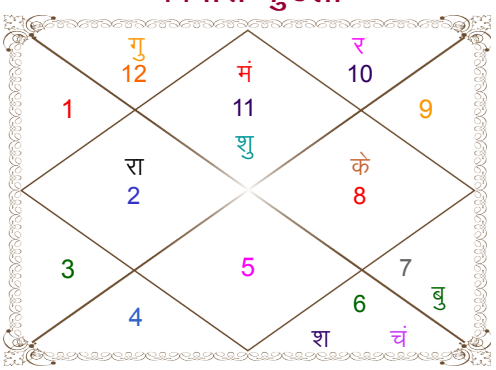

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	18:40:56	वृषभ	05:45:37
2	वृषभ	18:40:56	मिथुन	01:36:15
3	मिथुन	14:31:34	मिथुन	27:26:53
4	कर्क	10:22:12	कर्क	23:17:31
5	सिंह	10:22:12	सिंह	27:26:53
6	कन्या	14:31:34	तुला	01:36:15
7	तुला	18:40:56	वृश्चिक	05:45:37
8	वृश्चिक	18:40:56	धनु	01:36:15
9	धनु	14:31:34	धनु	27:26:53
10	मकर	10:22:12	मकर	23:17:31
11	कुम्भ	10:22:12	कुम्भ	27:26:53
12	मीन	14:31:34	मेष	01:36:15

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृषभ	05:45:37
2	मिथुन	02:13:39
3	मिथुन	26:52:36
4	कर्क	23:17:31
5	सिंह	24:14:24
6	कन्या	29:51:38
7	वृश्चिक	05:45:37
8	धनु	02:13:39
9	धनु	26:52:36
10	मकर	23:17:31
11	कुम्भ	24:14:24
12	मीन	29:51:38

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

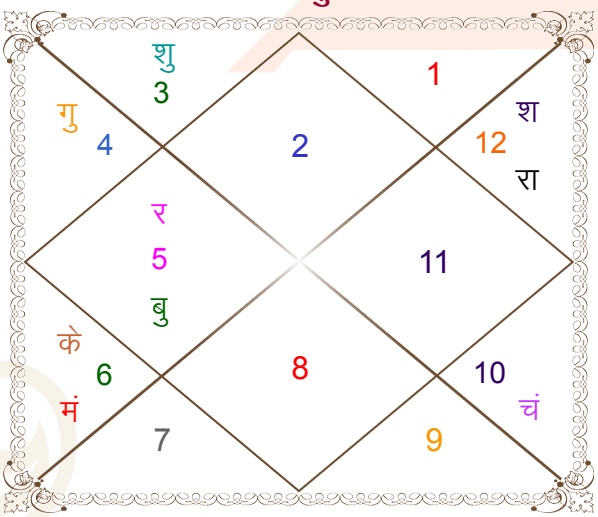

भाव कुंडली

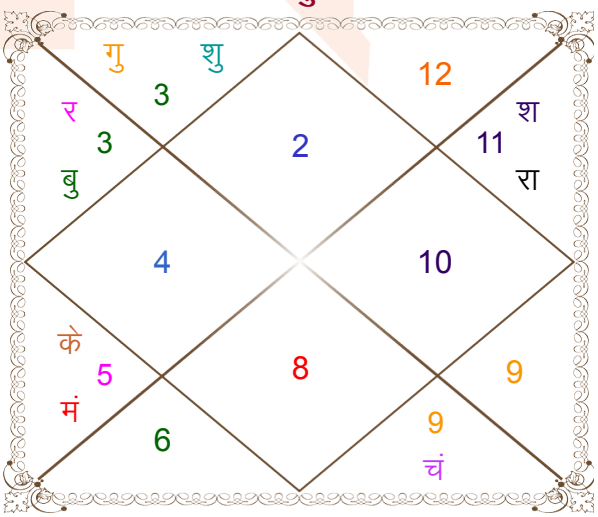

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 10 वर्ष 9 महिना 17 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
07/08/2025		24/05/2036		25/05/2042		24/05/2052		25/05/2059	
24/05/2036		25/05/2042		24/05/2052		25/05/2059		25/05/2077	
	00/00/0000	सूर्य	11/09/2036	चंद्र	25/03/2043	मंगळ	21/10/2052	राहु	04/02/2062
	00/00/0000	चंद्र	13/03/2037	मंगळ	24/10/2043	राहु	08/11/2053	गुरु	30/06/2064
	00/00/0000	मंगळ	18/07/2037	राहु	24/04/2045	गुरु	15/10/2054	शनि	07/05/2067
	07/08/2025	राहु	12/06/2038	गुरु	24/08/2046	शनि	24/11/2055	बुध	23/11/2069
राहु	25/07/2026	गुरु	31/03/2039	शनि	25/03/2048	बुध	20/11/2056	केतु	12/12/2070
गुरु	25/03/2029	शनि	12/03/2040	बुध	24/08/2049	केतु	18/04/2057	शुक्र	12/12/2073
शनि	24/05/2032	बुध	17/01/2041	केतु	25/03/2050	शुक्र	18/06/2058	सूर्य	05/11/2074
बुध	25/03/2035	केतु	25/05/2041	शुक्र	24/11/2051	सूर्य	24/10/2058	चंद्र	06/05/2076
केतु	24/05/2036	शुक्र	25/05/2042	सूर्य	24/05/2052	चंद्र	25/05/2059	मंगळ	25/05/2077

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
25/05/2077		25/05/2093		25/05/2112		26/05/2129		25/05/2136	
25/05/2093		25/05/2112		26/05/2129		25/05/2136		00/00/0000	
गुरु	13/07/2079	शनि	27/05/2096	बुध	22/10/2114	केतु	22/10/2129	शुक्र	25/09/2139
शनि	23/01/2082	बुध	05/02/2099	केतु	19/10/2115	शुक्र	22/12/2130	सूर्य	24/09/2140
बुध	30/04/2084	केतु	16/03/2100	शुक्र	19/08/2118	सूर्य	29/04/2131	चंद्र	26/05/2142
केतु	06/04/2085	शुक्र	17/05/2103	सूर्य	26/06/2119	चंद्र	28/11/2131	मंगळ	26/07/2143
शुक्र	06/12/2087	सूर्य	28/04/2104	चंद्र	24/11/2120	मंगळ	25/04/2132	राहु	08/08/2145
सूर्य	23/09/2088	चंद्र	27/11/2105	मंगळ	21/11/2121	राहु	13/05/2133		00/00/0000
चंद्र	23/01/2090	मंगळ	06/01/2107	राहु	10/06/2124	गुरु	19/04/2134		00/00/0000
मंगळ	30/12/2090	राहु	12/11/2109	गुरु	16/09/2126	शनि	29/05/2135		00/00/0000
राहु	25/05/2093	गुरु	25/05/2112	शनि	26/05/2129	बुध	25/05/2136		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 8 मा 26 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
07/08/2025		25/07/2026		25/03/2029		24/05/2032		25/03/2035	
25/07/2026		25/03/2029		24/05/2032		25/03/2035		24/05/2036	
	00/00/0000	गुरु	02/12/2026	शनि	24/09/2029	बुध	18/10/2032	केतु	19/04/2035
	00/00/0000	शनि	05/05/2027	बुध	07/03/2030	केतु	17/12/2032	शुक्र	29/06/2035
	00/00/0000	बुध	20/09/2027	केतु	13/05/2030	शुक्र	08/06/2033	सूर्य	20/07/2035
	00/00/0000	केतु	16/11/2027	शुक्र	22/11/2030	सूर्य	30/07/2033	चंद्र	25/08/2035
	07/08/2025	शुक्र	26/04/2028	सूर्य	19/01/2031	चंद्र	24/10/2033	मंगळ	19/09/2035
शुक्र	27/12/2025	सूर्य	14/06/2028	चंद्र	25/04/2031	मंगळ	23/12/2033	राहु	22/11/2035
सूर्य	20/02/2026	चंद्र	03/09/2028	मंगळ	02/07/2031	राहु	27/05/2034	गुरु	18/01/2036
चंद्र	22/05/2026	मंगळ	30/10/2028	राहु	22/12/2031	गुरु	12/10/2034	शनि	25/03/2036
मंगळ	25/07/2026	राहु	25/03/2029	गुरु	24/05/2032	शनि	25/03/2035	बुध	24/05/2036

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
24/05/2036		11/09/2036		13/03/2037		18/07/2037		12/06/2038	
11/09/2036		13/03/2037		18/07/2037		12/06/2038		31/03/2039	
सूर्य	30/05/2036	चंद्र	26/09/2036	मंगळ	20/03/2037	राहु	06/09/2037	गुरु	21/07/2038
चंद्र	08/06/2036	मंगळ	07/10/2036	राहु	08/04/2037	गुरु	20/10/2037	शनि	05/09/2038
मंगळ	14/06/2036	राहु	03/11/2036	गुरु	25/04/2037	शनि	11/12/2037	बुध	17/10/2038
राहु	01/07/2036	गुरु	28/11/2036	शनि	16/05/2037	बुध	26/01/2038	केतु	03/11/2038
गुरु	15/07/2036	शनि	27/12/2036	बुध	03/06/2037	केतु	14/02/2038	शुक्र	22/12/2038
शनि	02/08/2036	बुध	21/01/2037	केतु	10/06/2037	शुक्र	10/04/2038	सूर्य	05/01/2039
बुध	17/08/2036	केतु	01/02/2037	शुक्र	01/07/2037	सूर्य	27/04/2038	चंद्र	30/01/2039
केतु	24/08/2036	शुक्र	03/03/2037	सूर्य	08/07/2037	चंद्र	24/05/2038	मंगळ	16/02/2039
शुक्र	11/09/2036	सूर्य	13/03/2037	चंद्र	18/07/2037	मंगळ	12/06/2038	राहु	31/03/2039

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
31/03/2039		12/03/2040		17/01/2041		25/05/2041		25/05/2042	
12/03/2040		17/01/2041		25/05/2041		25/05/2042		25/03/2043	
शनि	25/05/2039	बुध	25/04/2040	केतु	24/01/2041	शुक्र	25/07/2041	चंद्र	19/06/2042
बुध	13/07/2039	केतु	13/05/2040	शुक्र	15/02/2041	सूर्य	12/08/2041	मंगळ	07/07/2042
केतु	03/08/2039	शुक्र	04/07/2040	सूर्य	21/02/2041	चंद्र	11/09/2041	राहु	22/08/2042
शुक्र	30/09/2039	सूर्य	20/07/2040	चंद्र	04/03/2041	मंगळ	03/10/2041	गुरु	01/10/2042
सूर्य	17/10/2039	चंद्र	15/08/2040	मंगळ	11/03/2041	राहु	26/11/2041	शनि	18/11/2042
चंद्र	15/11/2039	मंगळ	02/09/2040	राहु	30/03/2041	गुरु	14/01/2042	बुध	01/01/2043
मंगळ	05/12/2039	राहु	18/10/2040	गुरु	16/04/2041	शनि	13/03/2042	केतु	18/01/2043
राहु	26/01/2040	गुरु	29/11/2040	शनि	07/05/2041	बुध	04/05/2042	शुक्र	10/03/2043
गुरु	12/03/2040	शनि	17/01/2041	बुध	25/05/2041	केतु	25/05/2042	सूर्य	25/03/2043

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	89%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	81%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	77%	धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	64%	पराक्रम, सुख
लहसुनिया	केतु	59%	सुख, पराक्रम
पोवले	मंगळ	31%	सन्तति कष्ट, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुष्कराज	गुरु	19%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

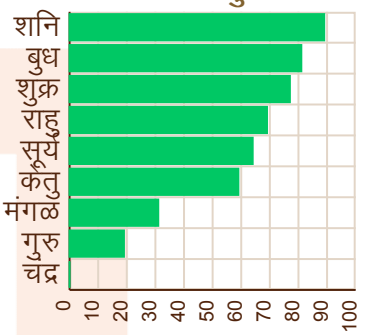

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/05/2036	52%	0%	31%	88%	19%	89%	95%	75%	66%
सूर्य	25/05/2042	77%	6%	44%	81%	31%	64%	77%	56%	44%
चंद्र	24/05/2052	70%	19%	31%	88%	19%	77%	89%	56%	44%
मंगळ	25/05/2059	70%	6%	53%	69%	31%	77%	89%	56%	66%
राहु	25/05/2077	52%	0%	6%	81%	19%	83%	95%	81%	44%
गुरु	25/05/2093	70%	6%	44%	69%	44%	64%	89%	69%	59%
शनि	25/05/2112	52%	0%	6%	88%	19%	83%	100%	75%	44%
बुध	26/05/2129	70%	0%	31%	94%	19%	83%	89%	69%	59%
केतु	25/05/2136	52%	0%	44%	81%	19%	83%	77%	56%	72%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	07/08/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टमस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टमस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टमस्थान चरण	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	धनार्जन
अष्टमस्थान चरण	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति पंचम भावात आहे पंचम भाव–संतति उच्च शिक्षा, तसेच बुद्धि चा भाव आहे, अतः मंगळ प्रभाव पासून आपण पुत्र संतति युद्ध रहणारे म्हणून तुम्हाळा जीवन साठी सुख भेंटणार. पण संतति प्राप्ति साठी काही उशीर होउ सकतात जीवनात आपण स्वतः परिश्रम आणि समज पासून उच्च शिक्षा प्राप्ति कराय साठी नेहमी प्रयत्न शील रहणारे यद्यपि या मधे कधीं–मधीं अड़चणे उत्पन्न होउ सकतात पण यांचा सामना साठी आपण सफळ रहणारे. तुमची तीव्र बुद्धि होणारी तसेच कधीं–मधीं तीव्रता चा भाव प्रदर्शित होणार, तुमची संवय कोण पण कार्य लवकर शुरू कराय ची होणारी. तसेच सरकारांचे मोठे आफीशर बरोबर चांगळे सम्बंध रहणार तसेच काही फायदे पण होणारे. पंचम भावात स्थित मंगळ ची चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव वर रहणारी या मुळे तुम्हाला उष्णता, पित्त, रक्त विकार वगेरे ची कधीं–मधीं त्रास होउ सकतात पण यांचे प्रभाव पासून तुम्हाळा विशेष किंवा एका–एकी धन लाभ चा योग आहे. सांसारिक विशेष कार्य मधे कधीं–मधीं अडचणे येउ सकतात पण यांचे सामना कराय साठी आपण सफळ होणारे, एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि आर्थिक उन्नति साठी शुभ रहणारी ह्या पासून जीवनात धन अर्जित करणारे तसच श्रीमंत सारख्या ख्याति प्राप्त होणारी तुमचे मिळकत चा श्रोत पण जास्ती रहणार समाजातीळ सम्मान ची वृद्धि होणारी. द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे तुमी कधीं–मधीं खर्चे जास्ती करणारे असे तुमचे शुभाशुभ कार्य मधे होणार. तसेच वाम डोण्या मधे कोणी पण चिन्ह किंवा कमजोरी पण होउ सकतात पण राजनैतिक लाभ सामान्य आणि सुखी, होणार. पंचम भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण सुखी जीवन साठी सफळ आणि समर्थ होणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं

व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– शुक्र
(07/08/2025 - 24/05/2036)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 07/08/2025 को आरम्भ होकर 24/05/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोढ़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(07/08/2025 - 25/07/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ होकर 24/05/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ होकर 25/07/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैया सुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी दक्षता उत्तम होगी। यात्राएं होंगी, देश-विदेश का ज्ञान होगा। साहसी होंगे, मगर इस कारण विषय-वासना में लिप्त भी हो सकते हैं। हर कदम पर सावधानी और संयम की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(25/07/2026 - 25/03/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/08/2025 को आरंभ हुई थी और 24/05/2036 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/07/2026 को प्रारंभ होकर 25/03/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 6, 8,10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धन संचित होगा, परिवार में खुशहाली होगी। प्रत्येक कार्य ईमानदारी और कानून के अनुसार करेंगे। सहकर्मियों से भी

व्यवहार उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(25/03/2029 - 24/05/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ हुई थी और वद 24/05/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/03/2029 को प्रारंभ होकर 24/05/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। आपके बहुत से कर्मचारी हो सकते हैं, आय उत्तम होगी। सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आय संभव है।

आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है मगर समाज में सम्मान मिलेगा। राजनीति में भी भाग ले सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।